भजन डायरी

श्री अम्बाराम जी मालवीय

ग्राम : बजेगढ मुरम्या

पोस्ट - चौबारा धीरा

तहसील - टौकखुर्द

जिला - देवास !म.प्र.!

भजन क्रमांक

सतनाम

नं० 11।

टेकः- धन्य तेरी करतारकला का पार नहीं कोई पाता है ।

चरण 1. निराकार भी होकर स्वामी सबका पालन करता है ।
निराकर निरबन्धन स्वामी जनम मरण नहीं धरता है ।

चरण 2. ऋषि मुनि और सन्त महात्मा निश दिन ध्यान लगाता है ।
चार खान चौरासी के माही तु ~~सर्वत्र~~ नजरएक आता है ।

चरण 3. तेरी कला का खेल निराला विरला महरम पाता है ।
जापर कृपा भई निज तेरी वाको दरशन दिखाता है ।।

चरण 4. पत्ते पत्ते पर रोशनी तेरी बिजली से चमक दिखाता है ।
चकीत भया मन बुद्धि तेरी जीवादास गुण गाता है ।।

टेक- → धन्य तेरी करतारकला का पार नहीं कोई पाता है । टेक

भजन क्रमांक

नं० 12। टेक गुरु बिन कैसे पावोगा रे करो अगम निगम सैर रे ।। टेक

चरण 1. हाँ के भाई रे नहीं सड़क ने ~~[illegible]~~ झुकाड़ा वहाँ है ।
नहीं है झीनी झीनी गैल गैल कहाँ पावोगा रे ।।
करो अगम निगम की सैर ।

चरण 2. हाँ के भाई रे नहीं वेड नहीं बाजा वहाँ है ।
नहीं छत्तीस्या राग कहाँ पावोगा रे ।। करो अगम निगमकी सैर ।।

चरण 3. हाँ के भाई रे नहीं महल नहीं खम्बा वहाँ है ।
नही धरती आकाश वहाँ कहाँ जावगा रे ।। करो अगम निगम की सैर ...

चरण 4. हाँ के भाई नहीं सुरज नहीं चंदा वहाँ है ।
नहीं झील मिल ज्योत कहाँ पावगा रे ।। करो अगम निगम की सैर ...

चरण 5. हाँ के भाई रे कहे कबीर धैर नरा वो है ।
म्हाने सतगुरु मिल गया पुरा परम पद पावगा रे करो अगम निगम की सैर ...

ट. → 6 गुरु बिन कैसे पावगा रे करो अगम निगम की सैर ।

भजन क्रमांक 3

टेक: गुरु सरी का देव मेरे मन भावे ×2
गुरु काटे करम की जाल जीव सुख पावे ।। टेक

चरण 1. यह है गुरु जी की सैन समझकर ध्यावे ।
वो नर चतुर सुजान परमपद पावे ।। टेक

चरण 2. इगला पिंगला नार सुखमना को ध्यावे सुखमना को ध्यावे ।
अर्ध उर्ध का बीज मन ठहरावे ।।

चरण 3. एक अखंडीत नाथ चरा-चर ध्यावे । चराचर ध्यावे ।
सकल ब्रम्ह का मार्गावेद न्यु गावे ।।

चरण 4.7 बोले ईश्वर दास भरम नै भगावे । भरम नै भगावे ।
शीतल शब्द के माय जीव सुख पावे ।।

भजन क्रमांक 4

टेक : इनी काया नगर के माय अमी रस टपकता ।
इनी भँवर के माय अमी रस टपकता ।। टेक

चरण 1. बारह सौदा सोलन सौदा तिरवेणी टपकता । दाता
घर सीर की गम ना पावे बाहर क्यों भटकता ।। हरि रस टपकता..

चरण 2. पाँच ने मारी पच्चीस ने पी लो ।
पांट-पांट न बून्दे ।।दाता
अनघड देव की कर लो सेवा ।
स्वासन स्वास रटन्ता ।। हरि रस टपकता

चरण 3 बंक नाल की झड पकड लो, आठ कंवल दरसन्ता । दाता
चाँद सूरज न थम कर राखो, मोती मगध चढन्ता । हरि रस टपकता..

चरण 4 पिरतम प्यारा जूग से न्यारा सती घाट घडन्ता । दाता
भादे रखण मयाराम बोले सुनागढ जाइने चडन्ता ।। हरि रस टपकता ..

टेक : इनी काया नगर के माय अमी रस टपकता ।
इनी भँवर के माय अमी रस टपकता ।। टेक

भजन क्रमांक 5

टैक सदगुरु दाता दीन दयाला, कर किरपा अवतारो मुझे,
कर बन्दगी गुरुदेव की, भव से कर दो पार मुझे ॥ टैक

चरण 1. भव सागर दरियाव भरा है । लम्बी धारा दिखे मुझे ।
लोभ, लालच की भँवर पडत है । न्हाने को धिक्कार मुझे ॥

चरण 2. उर्ध उर्ध की नाव बनालो, वा मैं पकड़ बिठालो मुझे ।
सबके सांची है केवटियां, पकड हाथ बैठालो मुझे ॥

चरण 3. चार खूंट और चौदह भवन मैं, सबमैं जानू सरदार तुझे ।
अखण्ड जोत का दरशन पाया, मिल गया करतार मुझे ॥

चरण 4. गुरु मछन्दर पुरा मिल गया, जिन्ने दी टकसार मुझे ।
गोरखनाथ गुरुनाथ इसी शरण मैं अमर पटा लिखवाया मुझे ॥

भजन क्रमांक 6

टैक :- सन्तो अमल करे तो पावे बिन समझे क्या पावे । टेक
चरण 1. जैसे सुराही लिए हाथ मैं, पल पल दरस दिखावे ।
औरन आगे करन उजरो, आप म अंधेरे जावे ॥ टेक अमल करे तो पावे

चरण 2. बने समाध रूपी घट भतर, दिलबर दिल ही मिलावे ।
पदी उतारो न कबहू नैनन बीच रमावे ॥ टेक अमल करे तो पावे

चरण 3 बांचो पौथी ग्रन्थ उचारो, जग को कथा सुनावे ।
जानत नाही कहां हम कैसे, घर जारे धूर बतावे ॥ टेक अमल करे तो पावे

चरण 4. ध्रुव, प्रहलाद, नाम देव छाके, मुरदा गढे जिवावे ।
कहे कबीर देख सहना को एक घरे तुलावे ॥ टेक अमल करे तो पावे

भजन क्रमांक 7

टैक तेरी काया नगर का कौन धनी, मारग मैं लूटे पाँचजनी ॥ टैक

चरण 1. पाँच पच्चीस ने रोका बाटा, साधु चढ गये औघट घाटा ।
जाय लिया उन उबठ बाटा, जो न उबरो आप धनी ॥ मारग मैं लूटे

[illegible]
चरण 2. आसा, तृष्णा नदिया भारी, बह गये सन्त बडे भेष धारी ।
जो उभरे सो शरण तुम्हारी, सिर पर चमके शैलानी ॥ मारग मैं लूटे ..

चरण 3. शेकर लोटे नेजा धारी, उनकी रैयत कौन विचारी ।
निदेव लुटे सब सारी, चमके रजगुण तीन धनी ।। मारग मैं लुटे ..

चरण 4. बन मैं डत लिये मुनिजन नागा, उर्ललिए ममता उल्टा टाँगा ।
जा के कान गुरु नी लागा अशीर्वाद सों आन बनी ।। मारग मैं लुटे ..

चरण 5 मारग बाका पंथ दुहेला रामानंद किन्हैं तट मेला ।
साहेब करीब देत जहाँ हेला, सुनिये सिरजन आपधनी ।। मारग मैं लुटे ..

भजन क्रमांक 8

टेक गुरु बिना कोई काम नी आवे कुल अभिमान मिटावे ।
कुल अभिमान मिटावे सन्तो सत लोग पहुँचावे ।।

चरण 1. जतन जतन करी सुत को रे पातु थाने अनेक लाड लडाया हो ।
तन की लकडी तोड चला है । धारा ~~कनक का नापा~~ लम्बा हाथ लगाया हो ।।

चरण 2. नारी कहे मैं संग चलूँगी ठगने ठग ठग खाया है ।
अन्त समय मुख मोड चली है जरा साथ नहीं देना है ।।

चरण 3. कोडी कोडी मायाजोडी जोडे के महल बनाया है ।
अन्त समय तोहे बाहर कर दिया तनीक रहने नाहीं पाया है ।।

चरण 4. भाई बन्धु तेरे कुटंब कबीला, सब धोखे मैं जीव बंधेला है ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो कर सदगुरु बंध छुडाया है ।।

भजन क्रमांक 9

टेक : चार वेद और पुराण अठारह ब्रम्हा ने पाया पार नहीं ।
निराकार निराधार निरंजन उनका कोई आकार नहीं ।। टेक

चरण 1. वो मालिक तो आप ही आप मैं, उनका कुटुम्ब परिवार नहीं
उनके नाम का भरा समुन्दर उस सागर का पार नहीं ।।

चरण 2. वो चादर तो बनी नूर की, उस चादर मैं तार नहीं ।
तार तार संसार उलझ गया, भूले करे इतवार नहीं ।।

चरण 3. वो साहेब घट घट की जाने, पत्थर को जुहार नहीं ।
उनके नाम की जप लो माला पड़े काहू की मार नहीं ।।

चरण 4. कहे कबीर सुनो भाई साधो गाने मैं कोई सार नहीं ।
चरण कमल की ऐसी महिमा बिन दरपन दीदार नहीं ।।

भजन क्रमांक 10

टेक जो तू आया गगन मण्डल से सीख दिया फिर डरना भी क्या ।
हो जा होशियार सदा गुरु आगे मनलाबीत फिर डरना क्या ।। टेक

चरण 1. उनमुन खेती धनी आगे खेती रात दिन नर सोता भी क्या ।
आवेगा पंछी चुग ~~x~~ जावेगा खेती रात दिन नर सोता भी क्या ।।

चरण 2. नौ सौ नदिया बहे घट भीतर सात समन्दर उण्डा भी क्या ।
गुरु गम होद भरा घट भीतर मूर्ख प्यासा जाता भी क्या ।। हो जा होशी

चरण 3. तेरे घर में नार सुखमना, वेश्या के घर जाता भी क्या ।
शीतल वृक्ष की छाया छोडकर कंकड पत्थर पर सोता भी क्या ।। टेक

चरण 4. चित्त चौपड का खेल मंडा है रंग पहचानों पाँसो का ।
गुरु गम पासा हाथ लिया है जीती बाजी हारो भी क्या ।।

चरण 5. कासा पितल का सोना बना है पल्ला लगा कोई पारस का ।
कहे कबीर ~~x~~ सुनो भाई साधो करम भरम बीच भुलाये क्या ।।

भजन क्रमांक 11

टेक राणाजी अब न रहूँगी तोरी हटकी । टेक

चरण 1. साध संग मोहि प्यारा लागे लाज गई घूँघट की ।
पीहर मेडता छोडा अपना सुरत निरत दोउ चटकी ।। टेक

चरण 2. सतगुरु मुकर दिखाया घटका, नाचूँगी दे दे चुटकी ।
हार सिंगार सभी ल्यो अपना, चूडी कर भी पटकी ।। टेक

चरण 3. मेरउ सुहाग अब मोकु दरसा और नाजाने घटकी ।
महल किला राणा मोहे न चाहे, सारी रेसम पटकी ।। टेक

चरण 4 हुई दिवानी मीरा डोले, केश लटा सब छीटकी ।
राणाजी अब न रहूँगी, तोरी हटकी ।। टेक

भजन क्रमांक 12

टेक एजी ~~अ~~ गुरूजी ने दियो अमर नाम गुरू तरीका कोई नहीं ।
जिन पर भरीया खजाना ~~दु~~ भरपुर कमी कछु ना रही ।। टेक

चरण 1. मेरा पीछवाडे अमर बेल डाला गगन गया, ।
जारी मालन छीछिगा अमर बेल कुवा माय ~~ऊ~~ रत ~~**~~ गया ।। टैक

चरण 2 वेता जागेगा लखपति इ राज हंसी ने बोलो क्यों नी ।
तम वातोनी इना हीरदा मैं कपट डोलो क्यों नी ।। टैक

चरण 3. गुरू जी उरचा नी उपवा जलया ते जोलनहीं ।
नुगरी कई जाने रैन इन्दारी कई तो जाने भान मैं ।। टेक

चरण 4. गुरू जी उगी आया वली हारी भान मैं चंदा वो तारा छीपी गया ।
ऐसा ~~खे~~ तबता है जोग पुराण नाम तले दबी गया ।। टेक

चरण 5. गुरूजी छोटाता पेड बजर का छाव मैं बैठो हंस ।
केसो उडता उडू जा तमन केडा पँख गडपड गडपड देव ।। टेक

भजन क्रमांक 13

टेक सकल हंस मैं राम हमारा, राम बिना कोई धाम नहीं । राम बीना कोई धाम नही
अखण्ड ब्रम्ह मैं जोत का वाता, राम को तुमरा दुजा नहीं ।। टेक

चरण 1 तीन गुण मैं तेज हमारा "पाँच" तत्व मैं जोत जले । पाँच तत्व पर जोत जले
जिनका उजाला चौदह लोक मैं तुरत ~~अ~~ डोर आकाश चढे ।। टेक

चरण 2 हीरा मोतीलाल जवाहरत प्रेम पदारथ परखो यहीं । प्रेम पदारत परखो यही
लाया मोती निरखत लेना राम धनी से म्हारी डोर लगी ।। टेक

चरण 3 नाभि कमल से परख लेना, हिरदे कमल बीच फिरे मणि । हिदय कमळ बीच फीरे मणी
अनहद बाजा बाजे शहर मैं ब्रम्हाण पर आवाज चढे ।। टेक

चरण 4 हरि जन होय तो जप लो घट मैं, बाहर जग मैं भटको मति । बाहार जग मैं भटको मती
गुरू प्रताप नानक सा. का शरण है भीतर बोले कोई दुजो नहीं ।। टेक

भजन क्रमांक 14

टैक — या गाडी म्हारा देश की जामे सदगुरु बैठा है ।
सदगुरु बैठा है जामे धन गुरु बैठा है ।। टैक

चरण 1. नियम धरम की गाडी बनाई सबका बन्दया रे ।
या गाडी जब चलने लागी ठेठ छबीली रे ।। टेक

चरण 2. दूर देश का चलना रे मजल कराडी रे ।
दूर देश में संग न साथी वां रैण अंधेरी रे ।। टेक

चरण 3 ओहंग घाट की टेसन उपर सैल मिलेगा रे ।
शीश काट चरणों में रख दो तो टिकिट मिलेगा रे ।। टैक

चरण 4 कहे कबीर सुनो भाई साधो मेरा मन ना जाने रे ।
या गाड़ी म्हारा देश की जा मे सतगुरु बैठा रे ।। टैक

भजन क्रमांक 15

टैक — चैत में चिन्ता म्हाने गुरु बिन कौन मिटावे और देव म्हाने दाय नी आवे
गुरु बिन कौन मिलावे ।
जब जब याद आवे गुरु हिरदे में म्हाने पल-पल याद सतावे । गुरुजी याद
आपकी आवे ।

चरण 1. बैसाख में भंवरा जो भटके बाग नजर न आवे ।
खिल रहे फूल लिपट रही कलियाँ भंवार बास न लेवे ।। टैक

चरण 2. जे. तो गर्मी को महिनो जीव घणो दुखावे ।
आप साहेब सागर में समाजा, म्हाने मिलिया से आनंद पावे ।। टैक

चरण 3. असाड में आसा म्हाने लागी और इन्द्र चढी ने आवे ।
मूसलधार बरसी म्हारो स्वामी हेतु धापे घर आवे ।। टैक

चरण 4 सावन में साहेब घर आवे, सखियन मंगल गावे ।
आनंद मंगल बधावा रे गावे म्हारा सतगुरु को आन बधावे ।। टैक

चरण 5 भादो तो भक्ति को महिनो सतगुरु सेन बतावे ।
कहे कबीर सुनो भाई साधों प्रेम अमीरस पावे ।। टैक

भजन क्रमांक 16

टैक मनक कमारा को यही मोड छो नी तो बन जावे चोरा सो को लाड़ो ।
मनारे कर सुमीरन धन आड़ो ।। टैक

चरण 1. इनी धरम बेल के जुगत से सींचो पाप जड़ से काटो ।
काट्या बाल्या तो फेर फुटेगा जड़ा मुल से खोदो ।। टैक

चरण 2. लेता देता कई टांग पसारो कई भर लई जावोगा गाड़ो ।
अन्त समय मैं चल्या जावोगा जलो दसेरा का पाड़ो ।। टैक

चरण 3. घर की तिरया से राजी राजी बोले और मात पिता से बोले आड़ो ।
घर की तिरया तो और मिलेगा मात पिता ना कोई आड़ो ।। टैक

चरण 4. सास सुन पर महा सुन है वहाँ सहाब निरो ठाड़ो ।
कहे कबीर सुनो भई साधौ धर्म चलेगा अगाड़ो ।। टैक

भजन क्रमांक 17

टैक : साधु सौधो सबद मैं कणीयारी ।
बिना डोर जल भरे कुआ से बिना सीश की पनियारी ।। टैक

चरण 1. बिना खेत एक बाडी बोड़ी बिन जल रेट चले भारी ।
बिना डोर जल भरे कुआ से बिना सिर की पनियारी ।। टैक

चरण 2. बिन माली एक बाग लगायो बिन पत्ते एक बेल चली ।
बिन चोचके का मिरगला बाडी चुगता घडी-घडी ।। टैक

चरण 3. लेकर धनुष चला शिकारी नहीं धनुष पर चाँप चढ़ी ।
मिरगा मार धरणी पर डारा नहीं मिरग को चोट लगी ।। टैक

चरण 4. बिन अन जल बऊ भोजन बनावे सोस नमन की बहु प्यारी ।
भोजन देख भुख भगी पिया की चतर नार की चतुराई ।। टैक

चरण 5. बिन तल्वार से लडे सिपाही कतल करे दोनो भाई ।
कहे कबीर सुनो भई साधो अमरापुर की तैयारी ।। टैक

भजन क्रमांक 18

टैक थारा मन के मनाई ले हो ।
मन के मनाई ले इते समझाई ले ।। टैक

चरण 1. दारू मत पीजे बीरा नशों तो घणों आवेगो ।
ई जहर का प्याला कैसे पीयोगा म्हारा बीर ।। टैक

चरण 2. वेद पुराण की गाठरिया मत बान्दो हो जी ।
अरे थारा मूल हाथ नी आवेगा म्हारा बीर ।। टैक

चरण 3. कोरी-कोरी आँख मैं काजलो मत मेलो जी ।
थारे नैणोरी रूप बिगाडीयों म्हारा बीर ।। टैक

चरण 4. हाथ माय दीवलो दफीरया मैं नी सुझे हो जी ।
अब तम रैण अंधेरी मैं कैसे चलो म्हारा बीर ।। टैक

चरण 5 पराई नार की संगत मती करना है हो जी ।
अरे थारी लाजीजी मैं दाग लगावे है जी ।। टैक

चरण 6. बडा भाई की नार माता कर मानो हो जी ।
थारी जिंदगी सफल बनावे हो जी ।। टैक

चरण 7. दौईकर जोड जती स्या राणी बोले हो जी ।
या तो थारी हुकमजी की चेली हूँ म्हारा बीर ।। टैक